

प्रहर और होरा प्रणालियों के आधार पर अल्पकालिक निर्णय लेने में ज्योतिषीय सहायता: एक विश्लेषणात्मक एवं साक्ष्य-आधारित समीक्षा

Parhlad Singh Ahluwalia, Shodh Prakashan, Hisar, Haryana

सारांश (Abstract)

पृष्ठभूमि: भारतीय ज्योतिष-परंपरा में दिन को प्रहरों और होराओं में बाँटकर कार्यारंभ के लिए "शुभ" और "अशुभ" काल निर्धारित किए जाते हैं। यह लाखों लोगों के दैनिक और अल्पकालिक निर्णयों को प्रभावित करता है। **उद्देश्य:** पत्र तीन प्रश्न पूछता है। (क) प्रहर-होरा प्रणाली का ऐतिहासिक और गणितीय स्वरूप क्या है? (ख) क्या उपलब्ध वैज्ञानिक साक्ष्य ज्योतिषीय भविष्यवाणी की वैधता का समर्थन करते हैं? (ग) यदि समर्थन नहीं है, तो मनुष्य के अल्पकालिक निर्णयों में समय का वास्तविक प्रभाव किस प्रकार का है? **विधि:** PRISMA 2020 और PRISMA-ScR के सिद्धांतों से निर्देशित, 2024 तक के साहित्य की लक्षित समीक्षा। इसमें प्राथमिक संस्कृत स्रोत, दोहरे-अंध (double-blind) परीक्षण, बड़े जनसंख्या-अध्ययन, संज्ञानात्मक पक्षपात-साहित्य और कालजैविकी (chronobiology) के अध्ययन शामिल हैं। **परिणाम:** समीक्षित नियंत्रित अध्ययनों में ज्योतिषीय चार्ट के आधार पर व्यक्तित्व या परिणामों की पहचान संयोग-स्तर से बेहतर नहीं पाई गई। इसके विपरीत, दिन के समय का मानव-निर्णय पर प्रभाव, अर्थात् कालजैविक लय, थकान और "नई शुरुआत" का मनोविज्ञान, शोध-साहित्य में दर्ज है। इसका ग्रहों से कोई संबंध नहीं है। **निष्कर्ष:** प्रहर-होरा प्रणाली का भविष्यसूचक-ज्योतिषीय दावा अनुभवजन्य साक्ष्य से समर्थित नहीं है। फिर भी इसकी समय-संरचना एक अनुशासनात्मक निर्णय-अनुष्ठान (pre-commitment ritual) की तरह उपयोगी हो सकती है। यह एक परिकल्पना है, सिद्ध तथ्य नहीं। पत्र इसके परीक्षण का एक प्रतिकृतिक (falsifiable) प्रोटोकॉल प्रस्तावित करता है।

कूट शब्द: प्रहर, होरा, ज्योतिष, अल्पकालिक निर्णय, कालजैविकी, मिथ्याकरणीयता, PRISMA-ScR

1. प्रस्तावना

भारतीय ज्योतिष के प्रमुख ग्रंथों में वराहमिहिर की बृहज्जातकविशेष स्थान रखती है। इसके आरंभ में ही "होरा" शब्द की व्युत्पत्ति पर चर्चा मिलती है। ग्रंथकार लिखते हैं कि कुछ लोग "अहोरात्र" शब्द के आदि और अंत के वर्ण-लोप से "होरा" शब्द मानते हैं [1]:

होरेत्यहो रात्र विकल्पम् एके वाञ्छन्ति पूर्वापर वर्ण लोपात् ।
कर्माजितं पूर्वं भवे सद् आदि यत् तस्य पङ्क्तिं समभिव्यनक्ति ॥ ३॥ [1]

इस श्लोक में दो बातें ध्यान देने योग्य हैं। पहली, "होरा" का संबंध दिन-रात (अहोरात्र) की काल-विभाजन-इकाई से जोड़ा गया है। दूसरी, शास्त्र का उद्देश्य पूर्वजन्म में अर्जित कर्मफल को अभिव्यक्त करना बताया गया है। अर्थात् मूल परंपरा में ज्योतिष केवल मुहूर्त का साधन नहीं, एक नियतिवादी (deterministic) दर्शन से भी जुड़ा था। आधुनिक व्यवहार में यही परंपरा रोजमर्रा के छोटे निर्णयों, जैसे यात्रा, भुगतान, हस्ताक्षर, साक्षात्कार और खरीदारी, के "शुभ क्षण" तक सिमट आई है।

भारतीय खगोल-ज्योतिष का विकास-क्रम विद्वानों ने विस्तार से दर्ज किया है [2,3]। यह भी स्थापित है कि कुंडली-आधारित (horoscopic) ज्योतिष की कई तकनीकी अवधारणाएँ, जिनमें "होरा" शब्द भी है, ग्रीक-हेलेनिस्टिक स्रोतों से संस्कृत में आईं। स्फुजिध्वज के *यवनजातक* के अध्ययन से [4], बेबिलोन से बीकानेर तक की ज्योतिष-यात्रा के विश्लेषण से [5], और यूनानी जन्मपत्रियों के संकलन से [6] यह चित्र उभरता है। संस्कृत ज्योतिष-साहित्य का समग्र सर्वेक्षण भी इसी बहु-स्रोत विकास को दिखाता है [7]। इसलिए "प्रहर-होरा" को शुद्ध वैदिक-अपरिवर्तित विज्ञान मानना ऐतिहासिक रूप से अपूर्ण है। यह एक संकर (syncretic) परंपरा है जिसमें भारतीय काल-गणना और हेलेनिस्टिक कुंडली-शास्त्र मिले हैं।

काल-मापन का गणितीय आधार *सूर्यसिद्धांत* में मिलता है, जिसमें एक अहोरात्र को 60 नाड़ियों में बाँटा गया है [8]। एक नाड़ी लगभग 24 मिनट की होती है। इस आधार पर एक प्रहर (याम), यानी दिन या रात का चौथा भाग, लगभग साढ़े सात नाड़ी या तीन घंटे का होता है। होरा इसका लगभग एक-तिहाई, यानी लगभग एक घंटा, होती है।

यह प्रणाली केवल शास्त्रीय बहस का विषय नहीं है। संस्कार और संस्कृति पर भारतीय समाजशास्त्रीय अध्ययन दिखाते हैं कि अनुष्ठानिक व्यवहार और काल-विश्वास भाषा, पारिवारिक संस्कार और सामूहिक स्मृति के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचारित होते हैं [9-11]। सामाजिक-मनोवैज्ञानिक शोध भी बताता है कि ज्योतिष में विश्वास शिक्षा-स्तर, सांस्कृतिक परिवेश और अनिश्चितता के अनुभव से जुड़ा होता है [12]। इसलिए इसका मूल्यांकन "सत्य या असत्य" के द्वंद्व से आगे जाकर करना होगा। उसमें यह भी देखना होगा कि यह निर्णय-व्यवहार में क्या भूमिका निभाता है।

समस्या-कथना अल्पकालिक निर्णय, यानी कुछ घंटों से कुछ दिनों के भीतर होने वाले निर्णय, अनिश्चितता, सीमित सूचना और भावनात्मक दबाव में लिए जाते हैं। निर्णय-विज्ञान बताता है कि ऐसी स्थितियों में मनुष्य सरल सुझाव-नियमों (heuristics) पर निर्भर होता है [13,14]। ज्योतिषीय "शुभ-अशुभ काल" एक ऐसा ही बाह्य सुझाव-नियम है। प्रश्न यह है कि यह नियम पूर्वानुमान में कितना सटीक है और मनोवैज्ञानिक रूप से क्या करता है।

शोध-प्रश्न

- RQ1: प्रहर-होरा प्रणाली का पाठ्य और गणितीय स्वरूप क्या है?
- RQ2: ज्योतिषीय भविष्यवाणी की वैधता पर नियंत्रित अनुभवजन्य साक्ष्य क्या कहते हैं?
- RQ3: समय-विशेष का वास्तविक (ग्रह-निरपेक्ष) प्रभाव निर्णय-गुणवत्ता पर किस रूप में सिद्ध है?
- RQ4: इस प्रणाली के लिए किसी परीक्षण-योग्य, मिथ्याकरणीय प्रोटोकॉल की रूपरेखा क्या हो सकती है?

2. शोध-विधि

2.1 समीक्षा का प्रकार और रिपोर्टिंग-ढाँचा

यह PRISMA 2020 की पारदर्शिता-भावना [15] और PRISMA-ScR की स्कोपिंग-समीक्षा-मार्गदर्शिका [16] से निर्देशित लक्षित (purposive) समीक्षा है। यह पूर्ण व्यवस्थित समीक्षा या मेटा-विश्लेषण नहीं है। मात्रात्मक पुनर्गणना भी नहीं की गई, केवल प्रकाशित परिणाम उद्धृत हैं। संदर्भ-शैली Vancouver है, जो NLM-मार्गदर्शिका पर आधारित है [17]।

2.2 पात्रता-मानदंड

तालिका-पूर्व सारणी: समावेशन/बहिष्करण मानदंड

मानदंड	समावेशन	बहिष्करण
समय-सीमा	2024 तक प्रकाशित	2024 के बाद के स्रोत
स्रोत-प्रकार	प्राथमिक संस्कृत ग्रंथ; समीक्षित शोध-लेख; विद्वत्-मोनोग्राफ	समाचार-पोर्टल, निजी ब्लॉग, असमीक्षित सामग्री
विषय	ज्योतिष-वैधता परीक्षण; संज्ञानात्मक पक्षपात; कालजैविकी/समय-प्रभाव; भारतीय काल-गणना	ज्योतिष की मात्र प्रचारात्मक व्याख्याएँ
भाषा	संस्कृत, हिंदी, अंग्रेज़ी	अन्य

2.3 पूर्वाग्रह और सीमाएँ

लक्षित समीक्षा में चयन-पूर्वाग्रह की संभावना रहती है। प्रकाशन-पूर्वाग्रह और "फ़ाइल-ड्रॉअर समस्या" यह भी जोखिम रखती है कि नकारात्मक परिणाम अप्रकाशित रह गए हों [20]। प्रकाशित निष्कर्षों की बड़ी संख्या के आँकड़ाई-मिथ्यात्व पर भी चेतावनियाँ दर्ज हैं [21]। इसलिए पत्र निष्कर्षों को निश्चित नहीं, संभावित मानता है। शोध-नैतिकता के सिद्धांत [18] के अनुरूप इसमें किसी मानव-प्रतिभागी का नया डेटा नहीं लिया गया। मौलिकता के लिए सभी विवेचन लेखक की अपनी भाषा में हैं और उद्धरण न्यूनतम तथा स्रोत-चिह्नित हैं, जिसकी पद्धति साहित्यिक-चोरी-निरोध के प्रकाशित विवेचन से मेल खाती है [19]।

3. प्रहर और होरा प्रणाली: पाठ्य एवं गणितीय विश्लेषण (RQ1)

3.1 होरा की शास्त्रीय परिभाषा

बृहज्जातक में होरा को राशि के अर्ध-भाग के रूप में भी परिभाषित किया गया है:

*द्रेष्काण होरा नव भाग संज्ञास्त्रिंशकद्वादश संज्ञिताश्च ।
क्षेत्रं च यद्यस्य स तस्य वर्गो होरेति लग्नं भवनस्य चार्धम् ॥ ९॥ [1]*

यहाँ "भवनस्य चार्धम्", अर्थात् राशि का आधा भाग, होरा कहा गया है। यह जन्मकुंडली के वर्ग-विभाजन (varga) वाला अर्थ है। दैनिक मुहूर्त में प्रचलित "काल-होरा" वास्तव में उससे भिन्न, बाद की परंपरा की अवधारणा है। यह अंतर महत्वपूर्ण है। जो ग्रंथ-वाक्य जन्म-विश्लेषण के लिए है, उसे दैनिक "शुभ घंटे" के प्रमाण के रूप में उद्धृत करना पाठ्यगत भ्रम पैदा करता है। विद्वत्-साहित्य में भी यह बहुअर्थता और ग्रीक *hōra* से संबंध चर्चित है [4,5,7]। इसलिए लोकप्रिय "होरा-चक्र" के पीछे का सीधा श्लोकीय प्रमाण स्थापित करना कठिन है।

3.2 गणितीय संरचना

सूर्योदय से अगले सूर्योदय तक का अहोरात्र 60 नाड़ी का माना गया है [8]। इससे निम्नलिखित संरचना निकलती है, जो लेखक का विश्लेषण है:

- **प्रहर:** अहोरात्र के 8 भाग (दिन के 4 और रात के 4), प्रत्येक लगभग 7.5 नाड़ी, अर्थात् लगभग 3 घंटे।
- **काल-होरा:** अहोरात्र के 24 भाग, प्रत्येक लगभग 2.5 नाड़ी, अर्थात् लगभग 1 घंटा। एक प्रहर में लगभग 3 होराएँ आती हैं।

- **स्वामी-क्रम:** होराओं के स्वामी ग्रह कक्षा-क्रम (शनि, गुरु, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध, चंद्र) के अवरोही चक्र में चलते हैं। दिन की पहली होरा का स्वामी उस वार का स्वामी होता है।

उदाहरण (रविवार): सूर्योदय पर सूर्य, फिर क्रमशः शुक्र, बुध, चंद्र, शनि, गुरु, मंगल, और यह चक्र दोहराता है। 24 होराओं के बाद 25वीं होरा चंद्र की आती है, जिससे अगला वार सोमवार बनता है। यह गणितीय स्थिरता प्रणाली की आंतरिक संगति दिखाती है। पर आंतरिक संगति बाह्य वैधता का प्रमाण नहीं है। यहाँ यह तर्क है कि वार-क्रम और होरा-क्रम का गणित संख्यात्मक रूप से सुसंगत है, जो अपने-आप में प्रशंसनीय गणितीय रचना है। परंतु इस संगति से यह सिद्ध नहीं होता कि कोई विशेष ग्रह किसी विशेष घंटे में मानव-कार्यों के परिणाम को प्रभावित करता है।

3.3 परंपरागत प्रयोग

मुहूर्त-साहित्य में सामान्यतः गुरु, शुक्र, बुध और चंद्र की होराओं को शुभ कार्यों के लिए अनुकूल और मंगल, शनि तथा (कुछ कार्यों में) सूर्य की होराओं को सावधानी वाला माना जाता है। प्रहर के आधार पर भी कार्य-वर्गीकरण होता है। यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि प्रहर-होरा में वर्णित "शुभ-अशुभ" का निर्धारण परंपरा में ग्रह-स्वभाव (naisargika) से होता है, किसी आँकड़ाई सत्यापन से नहीं। *बृहज्जातक* का यह उपसंहार-वाक्य भी इसी वैचारिक पृष्ठभूमि को दिखाता है कि ग्रंथकार स्वयं पूर्व-शास्त्रों के संक्षेप को ही प्रस्तुत कर रहे हैं [1]:

पृथु विरचितम् अन्यैः शास्त्रम् एतत् समस्तं तदनु लघु मयेदं तत् प्रदेशार्थम् एव । [1]

अर्थात् यह परंपरा संचित-अनुकरण से बनी है। परंपरा-निर्माण की यह प्रक्रिया उसके सम्मान और उसकी वैज्ञानिक जाँच, दोनों के लिए प्रासंगिक है।

4. समीक्षा के परिणाम: ज्योतिषीय वैधता पर नियंत्रित साक्ष्य (RQ2)

4.1 दोहरे-अंध परीक्षण

सबसे चर्चित प्रयोगों में से एक Carlson (1985) का है, जो *Nature* में प्रकाशित हुआ। इसमें 28 पेशेवर ज्योतिषी शामिल थे, जिन्हें उनके अपने पेशेवर संगठन ने चुना और जो परीक्षण-ग्रारूप से सहमत थे। 116 प्रतिभागियों के जन्म-विवरण पर आधारित चार्ट को तीन व्यक्तित्व-प्रोफाइलों में से सही प्रोफाइल से मिलाना था। संयोग से सही चयन की अपेक्षित दर एक-तिहाई थी। परिणाम में 116 में से 40 मामलों में सही मिलान हुआ, यानी लगभग 34 प्रतिशत, जो संयोग के लगभग बराबर है [22]। लेखक ने निष्कर्ष निकाला कि ज्योतिषीय परिकल्पना का समर्थन नहीं मिला।

Dean और Kelly ने चेतना और परामनोविज्ञान के संदर्भ में बड़े साहित्य की समीक्षा की। उन्होंने नतीजा निकाला कि अनेक नियंत्रित अध्ययनों में ज्योतिषीय निर्णयों की सटीकता संयोग-स्तर से भिन्न नहीं थी। साथ ही लगभग समान क्षण में जन्मे, "समय-जुड़वाँ" (time twins) माने गए, लगभग दो हजार व्यक्तियों के अनुगामी अध्ययन में उनके व्यक्तित्व और क्षमताओं में अपेक्षित समानता नहीं मिली [23]। यह ज्योतिष-सिद्धांत की केंद्रीय परिकल्पना, कि समय-विशेष पर जन्मे लोग समान होंगे, पर सीधा प्रहार है।

जन्म-तिथि और व्यक्तित्व/बुद्धि पर एक बड़े पैमाने के अध्ययन में भी जन्म की तारीख और व्यक्तित्व या सामान्य बुद्धि के बीच कोई सार्थक संबंध नहीं मिला [24]। एक अधिक आधुनिक दोहरे-अंध परीक्षण में, मानकीकृत पाँच-कारक व्यक्तित्व-सूची के परिणामों

की तुलना कंप्यूटर-जनित जन्मपत्री-विवरण से की गई। परिणाम फिर वही रहा: जन्मपत्री-आधारित व्यक्तित्व-विवरण स्वतंत्र मापन से मेल नहीं खाए [25]।

4.2 भारतीय संदर्भ का परीक्षण

भारत में नरलीकर और उनके सहयोगियों ने एक सांख्यिकीय परीक्षण किया, जिसे *Current Science* में प्रकाशित किया गया। इसमें ज्योतिषियों को ऐसी कुंडलियाँ दी गईं जो दो ज्ञात समूहों से थीं। एक समूह में उच्च बौद्धिक क्षमता वाले बच्चे थे और दूसरे में सीखने में कठिनाई वाले। उन्हें बताना था कि कुंडली किस समूह की है। सफलता की पूर्व-निर्धारित सीमा 40 में से 28 सही उत्तर रखी गई थी। प्रतिक्रिया देने वाले ज्योतिषियों में से कोई भी यह सीमा पार नहीं कर सका [26]। परीक्षण का महत्त्व यह है कि इसमें सफलता की कसौटी पहले से घोषित थी। ज्योतिषियों ने तत्पश्चात प्रतिभागियों की योग्यता पर प्रश्न उठाए, पर ऐसी आपत्तियों का स्वयं में परीक्षण-योग्य रूप नहीं है, और यही मिथ्याकरणीयता के सिद्धांत की केंद्रीय समस्या है (खंड 5.3)।

4.3 आलोचनात्मक समीक्षाएँ

आधुनिक ज्योतिष की एक व्यापक मनोवैज्ञानिक आलोचना में तर्क दिया गया कि ज्योतिष के पक्ष में रिपोर्ट किए गए प्रभाव प्रायः पद्धति-दोष या मनोवैज्ञानिक कारकों से समझाए जा सकते हैं [27]। इसी क्रम में एक प्रसिद्ध विश्लेषण ने बताया कि ज्योतिष की स्वीकार्यता उसकी सटीकता से अधिक उसके अनुभवजन्य मनोविज्ञान से तय होती है [28]।

4.4 तुलनात्मक सारणी

तालिका 1: ज्योतिषीय वैधता पर चयनित नियंत्रित अध्ययनों की तुलनात्मक सारणी

क्र.	अध्ययन	प्रारूप	मुख्य आँकड़ा/विवरण	निष्कर्ष की दिशा
1	Carlson (1985) [22]	दोहरा-अंध; 28 ज्योतिषी; व्यक्तित्व-प्रोफाइल मिलान	116 में से 40 सही (~34%); संयोग-अपेक्षा ~33%	संयोग-स्तर; परिकल्पना असमर्थित
2	Dean & Kelly (2003) [23]	साहित्य-समीक्षा + "समय-जुड़वाँ" अनुगामी अध्ययन (~2,000)	समय-जुड़वाँ में अपेक्षित समानता नहीं	जन्म-क्षण की समानता का प्रभाव नहीं मिला
3	Hartmann, Reuter & Nyborg (2006) [24]	बड़े पैमाने का जनसंख्या-अध्ययन	जन्म-तिथि बनाम व्यक्तित्व/बुद्धि	सार्थक संबंध नहीं
4	Wyman & Vyse (2008) [25]	दोहरा-अंध; NEO-FFI बनाम कंप्यूटर-जनित चार्ट	चार्ट-विवरण स्वतंत्र मापन से असंगत	असमर्थित
5	Narlikar et al. [26]	दोहरा-अंध; भारतीय कुंडलियाँ; 40 में से 28 की पूर्व-घोषित सीमा	27 प्रतिक्रिया देने वाले ज्योतिषियों में कोई भी सीमा पार नहीं	भारतीय पद्धति में भी असमर्थित

परिणाम-संश्लेषण (गुणात्मक)। पाँचों स्वतंत्र अध्ययन, भिन्न देशों, भिन्न प्रारूपों और भिन्न ज्योतिष-परंपराओं (पश्चिमी और भारतीय) के होते हुए, एक ही दिशा में जाते हैं: संयोग से बेहतर पूर्वानुमान का प्रमाण नहीं। यह "अभिसरण" (convergence) साक्ष्य की मजबूती का संकेत है, यद्यपि यह सावधानी रखनी चाहिए कि प्रहर-होरा (दैनिक मुहूर्त) का सीधा परीक्षण करने वाले दोहरे-अंध

अध्ययन, मेरी खोज में, सीमित या अनुपलब्ध रहे। उपरोक्त अध्ययन मुख्यतः जन्म-कुंडली पर हैं, मुहूर्त पर नहीं। यह इस समीक्षा की एक स्पष्ट साक्ष्य-रिक्ति (evidence gap) है। इसे "साक्ष्य का अभाव" (absence of evidence) कहना ही उचित है, "अभाव का साक्ष्य" (evidence of absence) नहीं।

5. विश्लेषणात्मक विवेचन: विभिन्न दृष्टिकोण

5.1 विज्ञान-दर्शन का दृष्टिकोण: सीमांकन की समस्या

विज्ञान-दर्शन में ज्योतिष को "छद्म-विज्ञान" कहने के तर्कों पर लंबी बहस है। एक प्रमुख विश्लेषण के अनुसार, ज्योतिष को छद्म-विज्ञान इसलिए माना जाता है कि वह लंबे समय से अपनी असफलताओं का समाधान किए बिना, पुराने सिद्धांतों पर टिका रहा और उसने वैकल्पिक सिद्धांतों से तुलना नहीं की [29]। Popper की मिथ्याकरणीयता-कसौटी के अनुसार कोई सिद्धांत वैज्ञानिक तभी है जब उसके विरुद्ध कोई संभावित अवलोकन परिभाषित हो [30]। नरलीकर-परीक्षण की पूर्व-घोषित सीमा इसी कसौटी का व्यावहारिक रूप थी। दूसरी ओर Kuhn का दृष्टिकोण, कि विज्ञान प्रतिमानों (paradigms) के भीतर "सामान्य विज्ञान" की तरह चलता है [31], यह प्रश्न उठाता है कि क्या ज्योतिष एक भिन्न प्रतिमान है जिसे बाह्य कसौटी से परखना अनुचित है। पर यह तर्क इसलिए कमजोर पड़ता है कि प्रहर-होरा का दावा, "इस घंटे का कार्य सफल होगा", मूलतः एक अनुभवजन्य, परिणाम-संबंधी दावा है। जो दावा अनुभवजन्य परिणाम का हो, वह अनुभवजन्य परीक्षण से बच नहीं सकता।

5.2 परंपरावादी दृष्टिकोण

परंपरावादी पक्ष का तर्क है कि ज्योतिष सांख्यिकीय "समूह-परीक्षण" से नहीं, व्यक्ति-विशेष की गहन व्याख्या से समझा जाना चाहिए, और परीक्षण-प्रारूप ज्योतिषी की पूर्ण प्रक्रिया को नहीं पकड़ता। इस आपत्ति का उत्तर यह है कि Carlson के प्रयोग में ज्योतिषियों ने स्वयं प्रोटोकॉल को "निष्पक्ष परीक्षण" माना था [22], और नरलीकर-परीक्षण में भी आपत्तियाँ परिणाम के बाद उठीं [26]। परिणाम के बाद उठी आपत्ति, जिसका कोई पूर्व-घोषित वैकल्पिक परीक्षण न हो, विज्ञान-सम्मत तर्क नहीं बनती। फिर भी परंपरावादी पक्ष का एक वैध बिंदु है: दैनिक मुहूर्त (प्रहर-होरा) की सीधी जाँच अपेक्षाकृत कम हुई है। इस पक्ष को सम्मान के साथ यह चुनौती दी जा सकती है कि वे स्वयं एक पूर्व-पंजीकृत परीक्षण का प्रस्ताव रखें, जैसा खंड 7 में दिया है।

5.3 संज्ञानात्मक-मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण: "सही" क्यों लगता है

यदि प्रहर-होरा पूर्वानुमान में विफल है, तो लोग इसे सही क्यों मानते हैं? साहित्य कई तंत्र बताता है:

- **फ़ोरर/बार्नम प्रभाव:** अस्पष्ट, सामान्य कथनों को व्यक्ति "अपने लिए विशिष्ट" मान लेता है। Forer के प्रसिद्ध प्रदर्शन में विद्यार्थियों ने एक ही सामान्य विवरण को अपने लिए अत्यंत सटीक आँका [32]।
- **निर्णय-पक्षपात:** Tversky और Kahneman ने दिखाया कि अनिश्चितता में मनुष्य उपलब्धता, प्रतिनिधित्व जैसे सुझाव-नियमों से निर्णय लेता है, जिनसे व्यवस्थित त्रुटियाँ पैदा होती हैं [33]। "शुभ होरा में किया गया कार्य सफल हुआ" वाली स्मृति पुष्टिकरण-पक्षपात से और मज़बूत होती है। असफलता की स्थिति में व्याख्या ("मैंने राहुकाल का ध्यान नहीं रखा") प्रणाली को बचा लेती है।
- **नियंत्रण का भ्रम:** Langer के प्रयोगों से पता चला कि लोग संयोग-आधारित परिस्थितियों में भी नियंत्रण का भ्रम पाल लेते हैं, जब उनके पास कोई "कर्मकांडी भागीदारी" हो [34]। मुहूर्त-निर्धारण ऐसी ही भागीदारी देता है।
- **विशेषज्ञता का भ्रम:** Kahneman और Klein के अनुसार वास्तविक अंतर्ज्ञानी विशेषज्ञता तभी बनती है जब वातावरण पर्याप्त रूप से नियमित हो और तुरंत, सटीक प्रतिपुष्टि मिले [35]। ज्योतिषीय भविष्यवाणी का परिवेश इन दोनों शर्तों पर खरा नहीं

उतरता, क्योंकि परिणाम विलंबित, बहुकारक और अस्पष्ट होते हैं। इसलिए ज्योतिषी का आत्मविश्वास सटीकता का विश्वसनीय संकेतक नहीं है।

5.4 समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

ज्योतिष-विश्वास को केवल अज्ञान कहना समाजशास्त्रीय रूप से अधूरा है। संस्कार और संस्कृति के भारतीय अध्ययन बताते हैं कि अनुष्ठान सामाजिक पहचान, निरंतरता और सामूहिक सुरक्षा-बोध का वाहक होता है [9–11]। सामाजिक-मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भी दिखाता है कि ज्योतिष में विश्वास किसी एकल कारक का परिणाम नहीं, बहु-सामाजिक परिस्थितियों का है [12]। इसलिए नीति-स्तर पर सीधा "निषेध" अपेक्षाकृत कम उपयोगी है। अधिक उत्पादक दृष्टि यह है कि विश्वास को पहचानते हुए, निर्णयकर्ता को साक्ष्य-आधारित विकल्प उपलब्ध कराए जाएँ।

6. समय का वास्तविक प्रभाव: कालजैविकी और निर्णय-विज्ञान (RQ3)

ज्योतिष-वैधता के असमर्थित होने का अर्थ यह नहीं कि समय का निर्णय पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। मानव-शरीर और मन समय-बद्ध लय में काम करते हैं, और यहाँ साक्ष्य ठोस है।

6.1 कालजैविक लय

मनुष्य की आंतरिक जैविक घड़ी का औसत आवर्त-काल लगभग 24 घंटे और कुछ मिनट पाया गया है, जो 24 घंटे के सौर-दिन से बहुत सूक्ष्म भिन्न है, और यह अत्यंत स्थिर तथा सटीक है [36]। संज्ञानात्मक कार्य-क्षमता, जैसे ध्यान, कार्यकारी स्मृति और सतर्कता, दिन के समय के साथ व्यवस्थित रूप से बदलती है [37]। रोचक यह है कि समस्या-समाधान में "अनुकूलतम" समय कार्य के प्रकार पर निर्भर करता है। अंतर्दृष्टि-आधारित (insight) समस्याओं में कम सतर्कता वाला समय भी लाभकारी हो सकता है [38]। इसका अर्थ यह है कि "सर्वश्रेष्ठ घंटा" सार्वभौमिक नहीं, कार्य और व्यक्ति के अनुसार बदलता है, जो ग्रह-आधारित सार्वभौमिक होरा-नियम से मूलतः भिन्न है।

6.2 निर्णय-थकान और समय

एक चर्चित अध्ययन में इजराइली पैरोल-न्यायाधीशों के निर्णयों में दिन के सत्र के साथ अनुकूल निर्णयों का अनुपात लगभग 65 प्रतिशत से गिरकर शून्य के निकट पहुँचते देखा गया, और विराम के बाद फिर बढ़ा। लेखकों ने इसे थकान या मानसिक संसाधन-क्षय से जोड़ा [39]। यह निष्कर्ष विवादित भी है। आलोचकों ने बताया कि मामलों का क्रम यादृच्छिक नहीं था और प्रतिनिधित्व-युक्त अधिवक्ता वाले मामले पहले निपटाए जाते थे [40], और पुनर्विश्लेषण में प्रभाव का आकार बहुत अधिक बताया गया माना गया [41]। यही सावधानी निष्पक्ष समीक्षा का हिस्सा है। प्रभाव संभवतः मौजूद है, पर उतना बड़ा नहीं जितना प्रारंभिक रिपोर्ट में दिखा। चिकित्सा के संदर्भ में भी एक अध्ययन में तीव्र श्वसन संक्रमण के लिए एंटीबायोटिक लिखने की प्रवृत्ति क्लिनिक-सत्र के दौरान बदलती पाई गई [42]। इन सबका सामूहिक संदेश है कि निर्णय की गुणवत्ता दिन के समय से प्रभावित हो सकती है, कारण मानसिक और जैविक हैं, खगोलीय नहीं।

6.3 "नई शुरुआत" का मनोविज्ञान

Dai, Milkman और Riis के "ताज़ा आरंभ प्रभाव" (fresh start effect) से पता चलता है कि सप्ताह, महीने या वर्ष के आरंभ जैसे "समय-चिह्न" (temporal landmarks) लोगों को आकांक्षी व्यवहार, जैसे लक्ष्य-निर्धारण, की ओर प्रेरित करते हैं [43]। यह निष्कर्ष प्रहर-होरा की संभावित मनोवैज्ञानिक भूमिका समझने में सहायक है। यदि कोई व्यक्ति "शुभ क्षण" को एक सार्थक आरंभ-

चिह्न बनाता है, तो वह कार्य को अधिक गंभीरता से, तैयारी के साथ आरंभ कर सकता है। वह सफलता ग्रह-स्थिति से नहीं, आत्म-प्रतिबद्धता और तैयारी से आएगी। यह परिकल्पना है, सिद्ध तथ्य नहीं। इसका परीक्षण-योग्य रूप खंड 7 में है।

6.4 तुलनात्मक सारणी

तालिका 2: प्रहर-होरा के पारंपरिक दावे और वैज्ञानिक साक्ष्य की तुलना

आयाम	प्रहर-होरा का पारंपरिक दावा	उपलब्ध वैज्ञानिक साक्ष्य	विश्लेषणात्मक मूल्यांकन
कारण-तंत्र	ग्रह-विशेष का स्वामित्व, जो घटे के परिणाम को प्रभावित करता है	ज्योतिषीय चार्ट-आधारित पूर्वानुमान संयोग-स्तर पर [22-26]	तंत्र का प्रमाण नहीं
समय-इकाई	नाड़ी/प्रहर/होरा (सार्वभौमिक)	जैविक घड़ी ~24 घंटे; व्यक्तिगत क्रोनोटाइप भिन्न [36,37]	समय-इकाई व्यक्तिगत, सार्वभौमिक नहीं
"श्रेष्ठ समय"	सभी के लिए ग्रह-आधारित	कार्य-प्रकार पर निर्भर [38]	भिन्न तंत्र; भिन्न निष्कर्ष
निर्णय पर प्रभाव	शुभ-अशुभ परिणाम	थकान, लय, समय-चिह्न का प्रभाव [39-43], कुछ निष्कर्ष विवादित [40,41]	प्रभाव संभव, कारण मानसिक-जैविक
परीक्षण-योग्यता	आपत्तियाँ प्रायः परिणाम के बाद	दोहरे-अंध प्रोटोकॉल उपलब्ध [22,26]	पूर्व-पंजीकरण से हल संभव

7. प्रस्तावित परीक्षण-प्रोटोकॉल: मिथ्याकरणीय अध्ययन-रूपरेखा (RQ4)

यह खंड लेखक का विश्लेषणात्मक प्रस्ताव है, किसी वास्तविक अध्ययन का परिणाम नहीं।

परिकल्पना H₁: परंपरा-परिभाषित "शुभ होरा" में प्रारंभ किए गए कार्यों की सफलता-दर, "अशुभ" या यादृच्छिक होरा में प्रारंभ किए गए समान कार्यों से अधिक होगी। **शून्य परिकल्पना H₀:** दोनों में अंतर नहीं है।

अभिकल्प: पूर्व-पंजीकृत, यादृच्छिक (randomized) अध्ययन। प्रतिभागियों को सरल, मापन-योग्य कार्य दिए जाएँ (उदाहरण: निश्चित समय-सीमा का सीखने-आधारित कार्य या पूर्व-परिभाषित लक्ष्य)। कार्य-आरंभ का समय यादृच्छिक रूप से "शुभ" या "अन्य" होरा-समूह में आवंटित हो। मूल्यांकनकर्ता को समूह का ज्ञान न हो।

नमूना-आकार (गणना): दो अनुपातों की तुलना के लिए, $\alpha = 0.05$ (द्विपक्षीय), शक्ति 80%, और H₀ में सफलता-दर 50% बनाम H₁ में 60% मानते हुए, मानक सूत्र $n \approx (1.96 + 0.84)^2 \times [p_1(1-p_1) + p_2(1-p_2)] / (p_1 - p_2)^2$ से प्रति समूह लगभग 385 प्रतिभागी चाहिए। यह एक आरेखनात्मक गणना है, किसी अध्ययन का आँकड़ा नहीं। इतना बड़ा नमूना ही दर्शाता है कि छोटे व्यक्तिगत "अनुभव" इस प्रश्न का निर्णायक उत्तर क्यों नहीं दे सकते।

पूर्व-घोषित निर्णय-नियम: यदि प्रभाव-आकार पूर्व-निर्धारित न्यूनतम (उदाहरणार्थ 10 प्रतिशत-बिंदु) से कम हो, तो H₁ अस्वीकृत मानी जाएगी। यह वही सिद्धांत है जो नरलीकर-परीक्षण में 40 में से 28 की सीमा के रूप में अपनाया गया [26]।

मनोवैज्ञानिक उप-अध्ययन: एक अतिरिक्त समूह को "स्वयं चुना हुआ सार्थक आरंभ-क्षण" (ग्रह-निरपेक्ष) दिया जाए। यदि "शुभ-अशुभ" समूहों में अंतर न हो पर "सार्थक आरंभ" वाले समूह में सुधार हो, तो यह खंड 6.3 की मनोवैज्ञानिक परिकल्पना का समर्थन होगा। यदि कोई समूह अंतर न दिखाए, तो दोनों परिकल्पनाएँ अस्वीकृत होंगी।

8. विमर्श

8.1 मुख्य निष्कर्षों का सारा समीक्षित साक्ष्य तीन बातें कहता है। पहली, ज्योतिषीय चार्ट से व्यक्तित्व, क्षमता या परिणाम का पूर्वानुमान नियंत्रित परिस्थितियों में संयोग से बेहतर नहीं पाया गया [22–26]। दूसरी, दिन का समय निर्णय को प्रभावित करता है, पर तंत्र कालजैविक, थकान-संबंधी और मनोवैज्ञानिक हैं [36–43]। तीसरी, "शुभ क्षण" का विश्वास संज्ञानात्मक पक्षपातों से टिका रहता है [32–35]।

8.2 व्यावहारिक निहितार्थ निर्णयकर्ता के लिए व्यावहारिक सुझाव ये हैं। पहला, प्रहर-होरा को पूर्वानुमान का आधार न बनाया जाए, विशेषकर वहाँ जहाँ परिणाम स्वास्थ्य, वित्त या सुरक्षा से जुड़े हों। दूसरा, यदि कोई व्यक्ति सांस्कृतिक या मनोवैज्ञानिक कारणों से इसका पालन करता है, तो इसे पूर्वानुमान की जगह प्रतिबद्धता-अनुष्ठान की तरह समझे, और जोखिम-भरे निर्णयों में साक्ष्य-आधारित जाँच-सूची (checklist) साथ रखे। तीसरा, कार्य-क्षमता के लिए अपने व्यक्तिगत कालजैविक शिखर-काल को पहचानकर कठिन कार्य उसी में रखे [37,38]।

8.3 परंपरा के प्रति न्याय यह पत्र परंपरा को अपमानित करने का प्रयास नहीं है। *बृहज्जातक* के रचयिता स्वयं शिष्यों से कहते हैं कि ग्रंथ को परखकर ग्रहण किया जाए। प्रयुक्त पाठ में नष्टजातक-प्रकरण का समापन-वाक्य परीक्षा की भावना व्यक्त करता है, यद्यपि इसका सटीक पाठ संस्करणों में भिन्न मिलता है और उसे इस पत्र में उद्धृत नहीं किया गया है [1]। परीक्षण की इसी भावना का विस्तार आधुनिक अनुभवजन्य परीक्षण है।

8.4 सीमाएँ इस समीक्षा की मुख्य सीमाएँ ये हैं।

- (क) यह लक्षित समीक्षा है, पूर्ण व्यवस्थित समीक्षा या मेटा-विश्लेषण नहीं।
- (ख) अधिकांश नियंत्रित अध्ययन जन्म-कुंडली पर हैं, दैनिक मुहूर्त पर नहीं। यह सबसे बड़ी साक्ष्य-रिक्ति है।
- (ग) साहित्य-सीमा 2024 तक है। उसके बाद के कार्य शामिल नहीं हैं।
- (घ) कालजैविकी के कुछ अध्ययन (विशेषकर न्यायाधीश-अध्ययन) विवादित हैं [40,41]।
- (ङ) संस्कृत ग्रंथों का पाठ-भेद और प्रहर पर प्राथमिक श्लोकों का अभाव, जिन्हें सत्यापित न कर पाने के कारण उद्धृत नहीं किया गया।
- (च) प्रकाशन-पूर्वाग्रह की संभावना बनी रहती है [20,21]।

9. निष्कर्ष

उपलब्ध नियंत्रित साक्ष्य के आधार पर प्रहर और होरा प्रणाली का भविष्यसूचक दावा, अर्थात् किसी घंटे-विशेष में ग्रह-स्वामित्व के कारण कार्य का सफल या असफल होना, अनुभवजन्य रूप से समर्थित नहीं है। निकटतम संबंधित परीक्षणों में परिणाम संयोग के स्तर पर रहे। इसके विपरीत, समय का वास्तविक प्रभाव कालजैविक लय, थकान और "नई शुरुआत" के मनोविज्ञान के माध्यम से निर्णय पर पड़ता है, ग्रहों के माध्यम से नहीं। इस प्रणाली का संभावित उपयोगी पक्ष इसकी अनुशासनात्मक समय-संरचना हो सकता है, जो एक परिकल्पना है और जिसका परीक्षण खंड 7 के प्रोटोकॉल से संभव है। भविष्य के शोध को दैनिक मुहूर्त की पूर्व-पंजीकृत, यादृच्छिक, दोहरे-अंध जाँच, व्यक्तिगत क्रोनोटाइप के नियंत्रण और भारतीय संदर्भ में बड़े नमूनों की ओर बढ़ना चाहिए।

संदर्भ

1. Varāhamihira. Br̥hājñātaka [Sanskrit text]. Sugita M, encoder. Electronic Sanskrit text, encoded 1994; revised 2002.
2. Subbarayappa BV, Sarma KV. Indian astronomy: a source-book. Bombay: Nehru Centre; 1985.
3. Rao SB. Indian astronomy: an introduction. Hyderabad: Universities Press; 2000.
4. Pingree D. The Yavanajñātaka of Sphujidhvaja. Cambridge (MA): Harvard University Press; 1978. (Harvard Oriental Series; vol. 48).
5. Pingree D. From astral omens to astrology, from Babylon to Bīkāner. Rome: Istituto Italiano per l'Africa e l'Oriente; 1997.
6. Neugebauer O, Van Hoesen HB. Greek horoscopes. Philadelphia: American Philosophical Society; 1959.
7. Pingree D. Jyotiḥśāstra: astral and mathematical literature. Wiesbaden: Otto Harrassowitz; 1981. (A History of Indian Literature; vol. 6, fasc. 4).
8. Burgess E. Translation of the Sūrya-Siddhānta, a text-book of Hindu astronomy. J Am Orient Soc. 1860;6:141-498.
9. Ahluwalia PS. भाषा, संस्कार और संस्कृति का समाजशास्त्रीय विश्लेषण. शब्दसागर. 2023:35-41.
10. Ahluwalia PS. भाषा और संस्कृति के विकास में संस्कारों का महत्व: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन. शब्दसागर. 2024:1-8.
11. Ahluwalia PS. संस्कार और संस्कृति: समाजशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन. शब्दसागर. 2023:17-25.
12. Bauer MW, Durant J. Belief in astrology: a social-psychological analysis. Cult Cosmos. 1997;1(1):55-72.
13. Kahneman D. Thinking, fast and slow. New York: Farrar, Straus and Giroux; 2011.
14. Gigerenzer G, Gaissmaier W. Heuristic decision making. Annu Rev Psychol. 2011;62:451-82.
15. Page MJ, McKenzie JE, Bossuyt PM, Boutron I, Hoffmann TC, Mulrow CD, et al. The PRISMA 2020 statement: an updated guideline for reporting systematic reviews. BMJ. 2021;372:n71.
16. Tricco AC, Lillie E, Zarin W, O'Brien KK, Colquhoun H, Levac D, et al. PRISMA extension for scoping reviews (PRISMA-ScR): checklist and explanation. Ann Intern Med. 2018;169(7):467-73.
17. Patrias K. Citing medicine: the NLM style guide for authors, editors, and publishers. 2nd ed. Bethesda (MD): National Library of Medicine; 2007.
18. Ahluwalia PS. Ethical issues in social science research. Shodh Patra: Int J Multidiscip Stud. 2024:1-8.
19. Ahluwalia PS. Plagiarism: detection techniques and tools. Siddhanta's Int J Adv Res Arts Humanit. 2024:1-11.
20. Rosenthal R. The file drawer problem and tolerance for null results. Psychol Bull. 1979;86(3):638-41.
21. Ioannidis JPA. Why most published research findings are false. PLoS Med. 2005;2(8):e124.
22. Carlson S. A double-blind test of astrology. Nature. 1985;318(6045):419-25.

23. Dean G, Kelly IW. Is astrology relevant to consciousness and psi? *J Conscious Stud.* 2003;10(6-7):175-98.
24. Hartmann P, Reuter M, Nyborg H. The relationship between date of birth and individual differences in personality and general intelligence: a large-scale study. *Pers Individ Dif.* 2006;40(7):1349-62.
25. Wyman AJ, Vyse S. Science versus the stars: a double-blind test of the validity of the NEO Five-Factor Inventory and computer-generated astrological natal charts. *J Gen Psychol.* 2008;135(3):287-300.
26. Narlikar JV, Godbole S, Gupta R, et al. A statistical test of astrology. *Curr Sci.* 2009.
27. Kelly IW. Modern astrology: a critique. *Psychol Rep.* 1997;81(2):931-62.
28. Dean G. Does astrology need to be true? Part 1: a look at the real thing. *Skeptical Inquirer.* 1986-87;11(2):166-84.
29. Thagard PR. Why astrology is a pseudoscience. *PSA Proc Bienn Meet Philos Sci Assoc.* 1978;1978(1):223-34.
30. Popper KR. *Conjectures and refutations: the growth of scientific knowledge.* London: Routledge and Kegan Paul; 1963.
31. Kuhn TS. *The structure of scientific revolutions.* Chicago: University of Chicago Press; 1962.
32. Forer BR. The fallacy of personal validation: a classroom demonstration of gullibility. *J Abnorm Soc Psychol.* 1949;44(1):118-23.
33. Tversky A, Kahneman D. Judgment under uncertainty: heuristics and biases. *Science.* 1974;185(4157):1124-31.
34. Langer EJ. The illusion of control. *J Pers Soc Psychol.* 1975;32(2):311-28.
35. Kahneman D, Klein G. Conditions for intuitive expertise: a failure to disagree. *Am Psychol.* 2009;64(6):515-26.
36. Czeisler CA, Duffy JF, Shanahan TL, Brown EN, Mitchell JF, Rimmer DW, et al. Stability, precision, and near-24-hour period of the human circadian pacemaker. *Science.* 1999;284(5423):2177-81.
37. Schmidt C, Collette F, Cajochen C, Peigneux P. A time to think: circadian rhythms in human cognition. *Cogn Neuropsychol.* 2007;24(7):755-89.
38. Wieth MB, Zacks RT. Time of day effects on problem solving: when the non-optimal is optimal. *Think Reason.* 2011;17(4):387-401.
39. Danziger S, Levav J, Avnaim-Pesso L. Extraneous factors in judicial decisions. *Proc Natl Acad Sci U S A.* 2011;108(17):6889-92.
40. Weinshall-Margel K, Shapard J. Overlooked factors in the analysis of parole decisions. *Proc Natl Acad Sci U S A.* 2011;108(42):E833.
41. Glöckner A. The irrational hungry judge effect revisited: simulations reveal that the magnitude of the effect is overestimated. *Judgm Decis Mak.* 2016;11(6):601-10.
42. Linder JA, Doctor JN, Friedberg MW, Reyes Nieva H, Birks C, Meeker D, et al. Time of day and the decision to prescribe antibiotics. *JAMA Intern Med.* 2014;174(12):2029-31.
43. Dai H, Milkman KL, Riis J. The fresh start effect: temporal landmarks motivate aspirational behavior. *Manage Sci.* 2014;60(10):2563-82.